आरती मंगलवार की

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर कांपे,
रोग दोष जाके निकट न झांके ।
अंजनी पुत्र महा बलदाई,
सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये,
लंका जारि सिया सुधि लाये ।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई,
जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर संहारे,
राजा राम के काज संवारे ।
लक्ष्मन मूर्छित परे, धरनि में,
आनि संजीवन प्राण उबारे ।
पैठ पताल तोरि यम कारे,
अहिरावण की भुजा उखारे ।
बाएं भुजा असुर दल मारे,
दाहिनी भुजा सब सन्त उबारे ।
सुर नर मुनि आरती उतारें,
जय जय जय हनुमान उचारें ।
कन्चन थार कपूर लौ छाई,
आरती करत अंजनि माई ।
जो हनुमान जी की आरती गावे,
बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवे ।
लंक विध्वंस कियो रघुराई,
तुलसीदास स्वामी आरती गाई ।

विवरण

जो दुष्टों का संहार करते हैं तथा श्री राम जी के प्रिय भक्त हैं, ऐसे हनुमान लला की हम आरती गाते हैं । जिनके पराक्रम के डर से गिरि पर्वत भी काँप जाते है तथा रोग एवं दोष जिनके डर से नजदीक नहीं आते हैं, ऐसे अपने भक्तों के सहायक हनुमान जी बड़े ही बलशाली हैं । श्री राम जी ने उन्हें कार्यभार सौंपा, जिसे उन्होनें बखूबी पूर्ण किया ।

लंका को जलाकर इन्हें सीता का पता लगाने में जरा भी कठिनाई नहीं हुई । लंका को जलाकर इन्होनें ढ़ेर सारे राक्षसों का विनाश करके श्री राम जी के कार्य को भली भाँति सम्पूर्ण/सरल किया । धरती पर लक्ष्मण शक्ति बाण लगने से मूर्छित होकर पड़े थे, तब संजीवनी बूटी लाकर इन्होनें लक्ष्मण के प्राण बचाये ।

अपनी माया शक्ति के कारण जब अहिरावण राम और लक्ष्मण को सोते हुए पाताल लोक लेकर चला गया था, तब इन्होनें वहाँ जाकर अहिरावण के हाथ तोड़ डाले, इस तरह इन्होनें अपने बाएँ हाथ से राक्षसों का संहार करके दाहिने हाथ से संत जनों (राम एवं लक्ष्मण) की रक्षा की ।

इनकी ये कीर्ति देखकर देवता एवं मुनि इनकी आरती उतारने लगे तथा हनुमान जी के नाम का जय-जयकार करने लगे । सोने की थाली में कर्पूर जलाकर माता अंजनि उनकी आरती कर रहीं हैं ।

इस हनुमान जी की आरती को जो कोई भी मनुष्य गाता है वह परमधाम को
प्राप्त कर आने-जाने के क्रम से छुट कारा पा लेता है । इन्होनें श्री राम जी के साथ मिलकर सारी लंका को नष्ट-विनष्ट कर डाला । तुलसीदास स्वामी इनके इसी आरती को गाते हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.